फारसी साहित्य के विकास में अवध प्रान्त का भाग

डॉ. तसनीम कौसर चिश्ती
एसोसिएट प्रोफेसर, फारसी विभाग
करामत हुसैन मुस्लिम गर्ल्स पी.जी. कालेज, लखनऊ

1. प्रस्तावना

भारत में फ़ारसी भाषा एवं इसके साहित्य ने कई शताब्दियों तक इस देश के विभिन्न प्रान्तों एवं राज्यों को अपने नियंत्रण में रखा है। दिल्ली के राजाओं एवं मुगल शासकों के काल में दिल्ली फ़ारसी का ऐसा केंद्र बन कर उभरा जिस का उदाहरण उस समय के ईरान में भी मिलना कठिन था।

मुगल शासन के पतन के साथ–साथ दिल्ली के दरबार के नष्ट होने के कारण फ़ारसी भाषा एवं उसका साहित्य भी प्रभावित हुआ। मुगल राजाओं ने अपनी सरपरस्ती से ईरान एवं हिन्दुस्तान के जिन फारसी लिखने वाले विद्वानों एवं कवियों की पक्षपात और हिमायत की थी वह इस सरपरस्ती से वंचित हुए। देश में धीरे–धीरे उर्दू एवं भारत की लोक भाषाऐं आगे बढ़ती गई परन्तु फारसी की वह परम्परा जो कई शतक से इस देश में इतनी कमजोर नहीं थी जो अचानक समाप्त होती जा जा रही थी इस नाजुक मौके पर और देहली दरबार के पतन ने देश के दूसरे प्रान्तों में इस परम्परा को सुरक्षित रखने एवं इसका विकास करने में अधिक महत्वपूर्ण भूमिका निभाई, अवध और लखनऊ को इस श्रंखला में सर्वप्रथम स्थान माना जा सकता है।

अवध के राजा खुद ईरानी नसल के थे। इस कारण उन्हे प्राकरित रूप से इस भाषा, इसके साहित्य एवं ईरानी संस्कृति में अधिक रूचि थी। इस कारण इनकी सरपरस्ती में अवध और लखनऊ ने दिल्ली के बाद फ़ारसी के प्रखियात केन्द्र की हैसियत प्राप्त कर ली।

लखनऊ को उत्तरी संस्कृति का अंतिम नमूना माना गाया है जो अपनी सभ्यता एवं संस्कृति में अनेक प्रकार की विशेषताओं का केन्द्र रह चुका है। तकल्लुफ़ एवं बनावट को लखनवी सभ्यता एवं संस्कृति का परिवाची समझा जाता है। जिसका प्रतीक खुद लखनऊ का काव्य साहित्य है।

लखनऊ स्कूल की स्थापना रखने वाले मिरज़ा मुहम्मद फ़ाखिर मकीन हैं। लखनऊ दबिस्तान के राजनीतिक, सामाजिक, सांस्कृतिक एवं साहितिक स्कूल में संबंधित है। मिर्जा फ़ाख़िर मकीन का संबंध शाह आलम सानी एवं नवाब आसिफद्दौला के दरबार से था वह अपने काल के प्रसिद्ध कवियों में गिना जाता है।

मकीन न केवल लखनऊ स्कूल की स्थापना करने वाला था। बल्कि वह आसिफुद्दौला का गुरू भी था। लखनऊ स्कूल की स्थापना होते ही मकीन के चारों ओर ज्ञान एवं साहित्य प्रेमी के एकत्तिरत हो गए जिनमें मुहम्मद बुरहान अली खान रहीम, मोहन लाल अनीस, राये सरब सुख दीवाना, मुहम्मद जाफ़र ख़ान राग़िब, राम सहाऐ, जलीस, राम वख़श मुती आदि।

दिल्ली से लखनऊ पलायन करने वाले कवियों में न केवल लखनऊ स्कूल के संस्थापक मिर्ज़ा मुहम्मद फ़ाख़िर मकीन बलकि अन्य दूसरे प्रसिद्ध कवि भी थे। जैसे सिराजउद्दीन अली खान आरजू, अमीर इंशा अल्ला खाँ इंशा, गुलाम हमादानी, मुसहफ़ी, मीर तक़ी मीर, मिर्जा रफ़ी सौदा एवं अबू तालिब लंदनी आदि। जिनका लघु वर्णन इस प्रकार से है।

2.मिर्जा मुहम्मइ फाखिर मकीन

अवध के दरबार को सौंद्रय प्रदान करने वालों में जहाँ अनेक उच्च श्रेणी के ज्ञानी एवं साहित्यकार थे उनमें से एक नाम मिर्जा मुहम्मद फ़ाखिर मकीन का भी है। वह न केवल लखनऊ स्कूल की स्थापना रखने वाला था बल्कि अपने काल का सुप्रसिद्ध लेखक था। इसका असली नाम मिर्जा मुहम्मद फ़ाखिर और तखल्लुस 'मकीन' था। इसका सम्बन्ध ईरान के एक छोटे से शहर नतंज़ से था। इनके परदादा अबदुररहीम ने नवाब अली मरदान खान कंधार के शासक के साथ शाहजहाँ के काल में 'नतंब' शहर से भारत पलायन किया क्योंकि मुगल शासक शाहजहाँ ने खुद विशेष रूप से मकीन के परदादा को अपने दरबार में आने का न्योता दिया था। इस आदेश का पालन करते हुए वह हिन्दुस्तान के शहर शाहजहांबाद (दिल्ली) आकर रहने लगे।

मकीन के दादा अब्दुल करीम भी अपने पिता अब्दुर रहीम के साथ शाहजहाँबाद आए। फिर उनकी शादी हिमायूँ एवं अकबर के दरबार के प्रसिद्ध कवि मुल्ला मुहम्मद कासिम काही की बेटी से हुई। अब्दुल करीम, अली मरदान खान के बेटे इबराहीम खान की सरकार से सम्बंधित थे एवं जब इब्राहीम खान को राजपाठ मिला तब वह उन के साथ कशमीर चले गए और वहीं मकीन के पिता मुहम्मद अशरफ का जन्म हुआ। मकीन के बाप दादा का सम्बंध कशमीर से था इस कारण कुछ लोगों ने मकीन को कश्मीर का रहने वाला कहा है। एवं कुछ ने मकीन का जन्मस्थान (दिल्ली) शाजहाँबाद लिखा है।

मकीन की जन्म तिथि 'साहबज़ादा बाबखतामो जाह' से निकलती है। जिसके तहत उसकी जन्म तिथि 113 हिजरी मानी जाती है। फ़ाखिर मकीन ने प्रारंभिक शिक्षा के पश्चात ज्ञान एवं कला जैसे सरफो नहव, अरज़ो बयान आदि में कमाल हासिल किया। बीस वर्ष की आयु में शेर शायरी की ओर ध्यान गया। अपनी प्रतिभा के बल पर बहुत जल्दी अच्छे कलात्मक शेर कहने प्रारम्भ कर दिए थे। फाखिर मकीन के प्रथम उस्ताद हुसैन कश्मीरी थे जो मुहम्मद शाह के काल में दिल्ली आ गए थे इसके पश्चात वह मिरजा अज़ीमा अकसीरी के शिष्य बने और शहर दिल्ली में अपने शेरी ज़ौक़ को पूरा करते रहे लेकिन जब दिल्ली अहमद शाह अबदाली के हाथों उजड़ी तो उन्होंने दिल्ली से 1173 हिजरी में पलायन किया।

लखनऊ में ठहरने के बीच मकीन फैजाबाद गए फिर वहाँ से 1182 में सैय्यद अशरफ जहाँगीर की जियारत के लिए कछौछा शरीफ गए। जब मकीन फैजाबाद आए उस समय शाह आलम सानी फैजाबाद में थे एवं इलाहाबाद के लिए जा रहे थे 'शाह आलम सानी फ़ाखिर मकीन से मिलना चाहता था जब शाहआलम सानी को यह सूचना मिली कि मकीन फैजाबाद में है तो उसने अपने इलाहाबाद के सफर में फ़ाखिर मकीन को भी सम्मिलित करना चाहा। राजा शाह आलम सानी की इच्छा का आदर करते हुए मकीन अलाहाबाद जाने के लिए तैयार हो गए जबकि शाह आलम सानी की मकीन से यह प्रथम मुलाक़ात थी। राजा मकीन के ज्ञान एवं उसकी प्रतिभा से बहुत प्रभावित हुआ। उसको बहुत इज्जत प्रदान की। शाह आलम सानी के इस ईनाम से प्रभावित होकर मकीन ने निम्नलिखित चौपाई राजा की ख़िदमत में पेश की।

दर ख़िदमते आलमो आलमियान
बेनिशस्त अगर मकीन मज़न ताने बर आँन
वर खाक फ़ितद ज़े ख़ाकसारी साय
नाचार बा पीशे आफ़ताबे ताबाँ।

मकीन ने शाह आलम सानी से मुलाकात की और उसका वर्णन अपने प्रसिद्ध कसीदे ''सिलसालतुल हिबा'' में किया है। मकीन के वजीहउद्दीन बरीन के अलावा उस काल के सुप्रसिद्ध कवि शेख़ अली हज़ीन से भी दोस्ताना सम्बंध थे।

अधिकतर तज़किरा नवीसों का मान्ना है कि मकीन ने शादी नहीं की परन्तु मोहन लाल अनीस ने अपने तज़किरे ''अनीसुल हिबा'' में मकीन के बेटे का नाम मिर्जा अली अमान समीन बताया है। जो कि ''समीन'' तखल्लुस करते थे। यह बात उसके तरजीह बंद से भी साबित होती है कि वह अपने बेटे की मृत्यु पर ज़ारो क़तार रोता है।

तज़किरा निगारों की राय है कि फ़ाख़िर बड़े नाजुक मिज़ाज इंसान थे। वह कवि सम्मेलनों में दूसरे कवियों के मुकाबले में उच्च स्थान पर बराजमान होते थे एवं अधिकतर शाही महफ़िलों का प्रारम्भ उनके अशआर से होता था एवं मकीन अपना कलाम अन्य ईरानी एवं हिन्दुस्तानी कवियों से पहले प्रस्तुत करते थे।

उनके मिज़ाज की तेज़ी एवं चिड़चिड़ेपन के कारण अधिकतर लोग उनसे डरते थे एवं मिलने से परहेज करते वह बड़े हस्सास इंसान थे। उन्हे पीड़ा का एहसास बहुत जल्दी होता था। मकीन के जीवन की कथा एवं उनकी नाजुक मिज़ाजी का वर्णन करते समय अगर मिर्जा रफ़ी सौदा से उनके मारके (लड़ाई) का वर्णन करना उचित होगा। इससे पहले खान अली आरजु एवं हज़ीन लाहीजी का मारका भी काफ़ी प्रसिद्ध है।

सौदा एवं मकीन की लड़ाई का कारण यह था कि अशरफ़ अली खान जो कि उस काल के प्रसिद्ध हुनरमंद एवं बाकमाल थे उन्होने काफ़ी प्रयास के पश्चात फ़ारसी कवियों के कलाम का इंतिख़ाब तज़किरे की शकल में किया और उसका नाम ''तज़किरए–अशरफ'' रखा एवं कवियों के अशआर को ठीक किया और उसको ठीक करने के लिए मकीन के पास ले गए पहले मकीन ने इंकार कर दिया परन्तु बाद में कुछ शर्तो के साथ इसे ठीक करने और परिवर्तित करने पर राज़ी हो गए। लेकिन सौदा के मुताबिक कुछ दिनों पश्चात जब अशरफ़ अली खान को यह ज्ञात हुआ कि मकीन ने सुप्रसिद्ध फ़ारसी कवियों जैसे शेख़ सादी, मौलाना रूमी, अमीर खुसरो, मौलाना जामी, साईब तबरेज़ी एवं शेख अली हज़ीन के अशआर को जगह–जगह काट दिया है। इस सूचना को पा करके अशरफ अली दुखी हुए और अपना तज़किरा मकीन से वापस ले लिया और उसे ठीक करवाने सौदा के पास ले गए।

आबे हयात में मुहम्मद हुसैन आज़ाद ने लिखा है कि सौदा खुद मकीन के ठीक किए गए अशआर पर एतराज़ नहीं करना चाहते थे। क्योंकि वह मकीन को फ़ारसी का मकान कवि मानते थे। परन्तु जब मकीन द्वारा बड़े–बड़े फ़ारसी कवियों के अशआर का काट दिये गए तो सौदा को बहुत तकलीफ़ हुई और अपने रिसाले ''इबरतुल ग़ाफ़लीन'' जो कि कुतलियाते सौदा में शामिल है। इन बड़े कवियों का बचाव किया एवं मकीन के कलाम को ठीक करने को गलत ठहराया।

लोगों की आलोचना का मकीन के ह्रदय एवं उनकी सेहत पर बुरा प्रभाव पड़ा। वह बीमार रहने लगे और अपने जीवन से मायूस हो गए और अन्यथा 27 मुहर्रम 1221 हिजरी यानि 1806 ई में मृत्यु पाई। उनकी मृत्यु फ़ालिज से हुई थी। उन्हे चुन्नी लाल के बाग में दफ़न किया गया। मोहन लाल अनीस ने जो फ़ाख़िर के चहीते शिष्यों में था उसने उनकी माददए तारीख़े वफ़ात यानि देहान्त तिथि उनके नाम की मुनासीबत ''मिर्ज़ा मुहम्मद फ़ाख़िर'' से निकाली है। जो 1221 हिजरी निकलती है।

मिर्जा मुहम्मद फ़ाख़िर मकीन के दीवान में क़सीदे, तरजीह बंद, गज़लें, मुख़म्मिसात, चौपाईयाँ एवं मसनवीयाँ शामिल है। वह कवि होने के साथ–साथ अच्छे गद्य लिखने वाले भी थे। उनके गद्य वा इंशा निगारी को उनके पत्र लेखन में देखना ज्यादा उचित है।

उनकी महान यादगार ''गुलज़ारे जाफ़री'' है। यह उनके निजी पत्र हैं। जो उन्होने अपने रिश्तेदारों, अपने समीपयों, शिष्यों को लिखे थे। इन पत्रों के द्वारा मकीन की मानसिक स्थिति सोच की प्रतिभा का ज्ञान होता है। उनके पत्रों बनाम ''गुलज़ारे जाफ़री'' के दो नुसख़े प्रर्याप्त है। एक नुसख़ा शाहदअज़ीमाबादी के पुस्तकालय में था जो पटना कालेज के इतिहास विभाग के पुस्तकालय से मैनुस्क्रप्ट की नुमाईश में सामने आया। इसका दूसरा नुसखा नैशनल पुस्तकालय कलकत्ता में है। इसको मकीन के प्रिय शिष्य और हिदायतउल्ला खाँ के बेटे मुहम्मद जाफ़र ख़ान राग़िब ने 1190 हिजरी में तरतीब दिया और यह चार भागों पर आधारित है।

इन पत्रों के पढ़ने से यह ज्ञात होता है कि मकीन फ़ारसी के बहुत बड़े गद्य लिखने वाले थे। इसकी महत्वता इसलिए भी है कि यह उनके जीवन काल में तरतीब दिया गया था। मकीन के इन पत्रों में अपनी हर एक हालत जैसे प्रसन्नता, दुख, मायूसी तमन्ना, बेक़रारी, बेबसी आदि को कुछ इस प्रकार से प्रस्तुत किया गया है कि इससे भावनाओं की जीती जागती तसबीर सामने आ जाती है। उनकी इस पत्रावली से न केवल साहितक शौक़ पूरा होता

है बल्कि पत्रों का संग्रह हज़ारों ज्ञान से सम्बन्धित इतिहासिक, सामाजिक एवं अन्य बातें भी उभर कर सामने आती हैं। इससे यह भी अंदाजा होता है कि उनकी गद्य भी उनके पद की तरह सादा लेखन का सर्वोत्तम उदाहरण है। मकीन अपने काल का सुप्रसिद्ध कवि है। इसका कलाम उन सारी विशेषताओं से सजा हुआ है जो शेर की सुन्दर्ता होती है। जैसे शीरीन बयानी, मज़मून आफ़रीनी, बुलन्द परवाज़ी, नाजुक ख़याली, जजबए एहसास, इंसानी हमदर्दी, राष्ट्रीय एकता एवं सनाए बदाए आदि। डॉ0 वारिस किरमानी ने अपनी किताब में लिखा है कि मकीन शायरी की सभी असनाफ़े सुखन को प्रयोग में लाऐ हैं। "Mirza fakhir Makin was an excellent poet master of qasida & mathnavi & tried his pen on other generes of poetry"

मकीन ने यूँ तो सभी असनाफ़े सुखन को बरता है और अपने दीवान का तीसरा कसीदा ''ईशताक़िया'' के नाम से लिखा जो ''फ़ीरक़या'' के नाम से प्रसिद्ध है और उस समय के इतिहासक परम्परा का दर्शन कराता है। जिस समय अहमद शाह अबदाली ने दिल्ली पर आक्रमण किया और दिल्ली उजड़ गई इन परिस्थितियों में हर ज्ञान एवं कला के प्रेमियों को दिल्ली छोड़ने पर विवश होना पड़ा क्योंकि ऐसी स्थिति में ज्ञान एवं साहितिक कार्यों के विद्वान, शोधकर्ता, इतिहासकार दूसरे प्रान्तों जैसे फैजाबाद, लखनऊ एवं हैदराबाद आदि में जाकर अपनी कला दर्शानें में लग गए जिस कारण से साहित्य के दो बड़े केन्द्र हैदराबाद और दिल्ली उत्पन्न हुए।

दिल्ली उस काल में भारत की राजधानी होने के कारण से अदीब, विद्वान, कवि एवं विभिन्न प्रकार के केन्द्रों की स्थापना होने लगी थी। कर्नाटक, मैसूर, हैदराबाद, अज़ीमाबाद और मुरशिदाबाद में विद्वानों एवं लेखकों की जय जय कार होने लगी। इस लेख में मैं ने केवल चार बड़े केन्द्रों जैसे लखनऊ, हैदराबाद, मुरशिदाबाद एवं अज़ीमाबाद का संक्षेप में वर्णन करती हूँ।

1. हैदराबाद

इस काल में हैदराबाद भी अनेक कवियों, विद्वावानों और लेखकों की परवारिश कर रहा था। इसका एक मुख्य तरीका यह था कि जिसको देखकर वह किसी कला में माहिर है और इस कला में ख्याति प्राप्त कर चुका है तो उस निमंत्रण के साथ ज़ादेराह भेजकर बुला लेते एवं उसकी महमान नवाज़ी करते। कभी–कभी ईनाम व इकराम से भी नवाज़ेत थे। इसी कारण मिर्जा अब्दुल कादिर बेदिल, सिराजउद्दीन अली खान आरजु, मौलाना शेख अली हजीन, मौलाना गुलाम अली आज़ाद बिलगिरामी और हाकिम लाहौरी को संदेश भेजे गए।

2. मुर्शिदाबाद

दूसरे केन्द्र मुर्शिदाबाद बाद में भी हर मैदान के कलाकारों, कवियों, लेखकों और विद्वानों का जमावड़ा था। मुरशिदाबाद के नाज़िमे आला नवाब अलाऊद्दीन सरफ़राज़ खाँ ने अधिकतर कवियों को अपने यहाँ बुलाया। मीर मुर्तज़ा हैदर देहलवी, मीर मुर्तजा हैदर देहलवी, साने बिलगिरामी, मीर अब्दुल जलील बिलगिरामी, ईबराहीम खाँ खलील आदि मुरशिदाबाद गए। साने बिलगिरामी का कुछ समय पश्चात वहीं देहान्त हो गया। जिससे फ़ारसी साहित्य को बड़ी हानि एवं छती हुई क्योंकि वह लोगों को शेर कहने और किताबें लिखने की प्रेरणा देते थे। इनके देहान्त के बाद अन्य कई कवि एवं लेखक इस केन्द्र की ख्याति बन कर आऐ। इन सबके प्रयासों ने इस केन्द्र को बरकरार रखा। नवाब अलाउददौला सरफ़राज़ खान के देहान्त के पश्चात यह केन्द्र लम्बे काल तक ठहर न सका और अनुमानित तौर से बारवहीं सदी हिजरी के अंत में इस केन्द्र पर पतन के बादल छाने लगे थे। परन्तु इस छोटे से काल में ही यहाँ फ़ारसी भाषा एवं साहित्य ने अधिक प्रगति की।

3. अज़ीमाबाद

अज़ीमाबाद (पटना) में राजा प्यारे लाल, उलफ़ती के नाम और फिर उनके देहान्त के पश्चात खुद उलफ़ती फारसी के इस केन्द्र को काफी समय तक काईम रखे रहा। उसके घर में खुद बहुत बड़ा पुस्तकालय था। जिसमें वह अनुमानित तौर से 2500 किताबें रखे हुए थे। पहले उलफ़ती देहली में थे वहाँ पर फ़ारसी साहित्य की ख़िदमत के साथ–साथ राजा अकबर सानी को हर वह तरीक़र अपनाने के लिए सलाह दिया करते थे जिससे मुग़ल शासक के लाभ अधिक से अधिकतर सुरक्षित रहें। अंग्रेजों को यह बात नागवार गुज़रती थी इस समय तक अंग्रेजों के बल में काफी बढ़ोत्तरी हो गई थी जिसके कारण वह राजा पर बार–बार दबाव डाल रहे थे कि वह उलफ़ती को हटा दें। राजा ने अंग्रेजों के दबाव से मजबूर होकर उलफ़ती को अपने से दूर कर दिया और उलफ़ती मौन होकर अपनी जन्मभूमि वापस चल गए और राजनैतिक जीवन से सम्पूर्ण रूप से विदा ले ली। वह अज़ीमाबाद के बहुत बड़े रईस थे और एक बहुत विशाल पुस्तकालय के स्वामी भी थे। इसलिए उन्होने साहित्य की ओर ख़ातिर खुवाह ध्यान

दिया। धीरे–धीरे उलफ़ती की साहितिक योगदान की ख्याति होने लगी। जिसको सुनकर लेखक कवि वहाँ एकत्ररित होने लगे। अंततः साहितिक पर्यावरण प्रगति पाता गया और गद्य एवं पद दोनो क्षेत्रों में कार्य होने लगा। इन तीनों साहितक केन्द्रों में फ़ारसी भाषा एवं साहित्य को जीवित रखने के प्रयास किये गए। इन केन्द्रों में न कोई ऐसी हस्ती मौजूद थी जिसने फ़ारसी के बगिया के फूलों को पूर्ण रूप से मुरझाने नहीं दिया बल्कि इन कवियों में ताज़गी बरकरार रखने के निरतंर प्रयास किए।

4. केन्द्र लखनऊ स्कूल

इन साहितक केन्द्रों में लखनऊ सबसे महत्वपूर्ण केन्द्र था क्योंकि शुमाली हिन्द में सबसे ज्यादा महत्वपूर्ण अज़ीमोंशान शासन अवध के राजाओं का था। जब मुग़लया शासन की केन्द्रय शासकत का पतन हुआ तो दूसरी ओर अवध में एक ऐसी हुकुमत की स्थापना हुई जहाँ सैकड़ों वर्षो की सभयता एवं संस्कृति का एक नयी पनाहगाह मिल गई एवं इसके फ़लने फूलने एवं विकसित होने के नए मार्ग एवं साधन पैदा हो गए।

अवध की इस नई हुकुमत ने उत्तरी संस्कृति एवं सभ्यता के इस टिमटिमाए चिराग़ को न केवल बुझने से बचा लिया बल्कि इस चिराग़ से नामालूम कितने चिराग़ जला दिए। अवध का यह राज्य मध्यकालीन की संस्कृति एवं सभ्यता का अंतिम नमूना बनकर इतिहास के पन्नों पर प्रतीत हुआ।

जब नवाब शुजाउद्दौला ने फ़ैजाबाद को अपना ठिकाना बनाया एवं कलाकारों और हिन्दुस्तानियों की कदरदानी का नया द्वार खोजा तो दिल्ली एवं दूसरे प्रांतों से कलाकार यहाँ आने लगे! रोज़ी रोटी के खिचाँव ने फिर इन को इसी भूमि का सदैव रहने वाला मेहमान बना लिया। इस कारण कवि भी खिंच खिंच कर यहाँ आए एवं जब नवाब आसिफुद्दौला राजधानी फ़ैज़ाबाद से लखनऊ आए तो लखनऊ शेर एवं हर कला के महान कलाकारो का केन्द्र बन चुका था! खुद अवध के राजाओं ने केवल कवियों एवं लेखकों की ख़ातिर तवाज़ा नहीं की बल्कि उन की क़दरदानी में अशरफ़ियों ही नहीं लुटाई बल्कि वह खुद भी कुछ राजाओं ने फ़ारसी भाषा की बहुत ख़िदमत की! विशेष रूप से वाजिद अली शाह जो बहुत ही मौजून तबीयत के कवि एवं लेखक थे उन्हों ने सैकड़ों मुहावरात और शब्दों के बनाने में दिलचसपी ली और कितने लोग खुद राजा से इसलाह लेते थे! अवध के राजा अगर अपने फय्याज़ हाथों को इधर से खींच लेते तो न आरजू एवं मीर आते! न मकीन का मज़ार यहाँ होता! न जुरअत, रहीम, अनीस, मीर, सौदा, क़तील, इंशा आदि शाही काल के इतने महान कलाकार इस भूमि पर आते जिन की सूची बहुत लम्बी है! नवाब यमीनुद्दौला की क़दरदानी से सौदा और इंशा जैसे महान कवि पैदा हुए।

नवाब यमीनुद्दौला के आदेश से उनकी अदबियत प्रतीत होती है। शाहाने अवध भी बड़े अदब नवाज थे! ग़ाजीउद्दीन हैदर ने हुक्के का नाम हुसने महफ़िल, जग़रात का नाम दही और मलाई का नाम बालाई रखा! इसी प्रकार वाजिद अली शाह ने सैकड़ों चीज़ों के नामों के तोहफ़े प्रदान किए जो आज उर्दू की साज सज्जा का कारण हैं। भारत में किसी राजा की किताबें इतनी ज्यादा कारआमद नहीं जिस क़दर वाजिद अली शाह की हैं। वाजिद अली शाह ने खिताबात और आदेशों में शाईरी और साहित्य के जौहर कूट कूट कर भर दिए। औरतों, मर्दों, इमारतों, बागों और जानवरों को हज़ारों ख़िताब दे डाले! नवाब आसिफुद्दौला खुद नाज़ुक ख़याल कवि और शाईरी के क़दरदान भी थे! फिर लेन देन में प्रसिद्ध अमीर एवं रईस शायरी को शराब से उनके काल में सरशार थे! बड़े बड़े महलों में घूमना होता था, कवि सम्मेलन होते थे। और शायरी के खूब सिले मिलते थे। नवाब आसिफुद्दौला का उर्दू पर यह अभार है कि जब दिल्ली की शायरी का बाग़ लुट गया तो सर्वप्रथम रूप से नवाब का हाथ उठा और सारे बेमक़सद लोगों की मदद की फर्ज़ अदा करने लगा जो कलाकार आया उसकी क़दर हुई और आसिकी दरबार विद्वानों शीरीन गुफ़्तार कवियों से भर गया।

केवल वाजिद अली शाह के काल में इतने कवि लखनऊ में थे जितने सारे हिन्दुस्तान में थे, शुजाउद्दौला से लेकर वाजिद अली शाह तक कुछ राजाओं ने और अमीरों, रईसों, वजीरों ने दामे दिरामे, सुख़ने हर प्रकार की ख़िदमत की और उर्दू भाषा एवं साहित्य पर कयामत तक रहने वाला एहसान कर गए! वाजिद अली शाह के अंतिम काल में फ़साहते ज़बान और शाईरी ने लखनऊ में मज़बूत स्थान पकड़ लिया था! चंद दिन में शेर कहना लखनऊ की एक वज़ादारी बन गया और कवियों की यहाँ इस क़दर कसरत हो गई शायद कहीं किसी और भाषा में नहीं हुई होगी।

अवध नवाबीन के काल की सभ्यता एवं संस्कृति के लिए लखनऊ बहुत प्रसिद्ध रहा। ज्ञान और कला का काफ़ी समय तक केन्द्र रहा, लखनऊ में शायरी के साथ ज्ञानवर्धक बहसें भी अधिक होती थी यहाँ पर ख़ान आरजू, सौदा, महफ़िलों में प्रसिद्ध हो चुके थे इन्हीं ज्ञानवर्धक बहसों से लखनऊ स्कूल की स्थापना हुई। ख़ान् आरजू और उनके काल के शायरों के बाद हज़ीन, क़तील, जुरअत, इंशा, मीर और मुसहफ़ी आदि भी लखनऊ पहुँच गए थे इन कवियों और इनकी शायरी की ऊँचाईयाँ अपनी चरम सीमा पर पहुँची! लखनऊ के ताअल्लुक़दारों, ज़मीनदारों और अन्य अमीरों ने कवियों और लेखकों को संरक्षण प्रदान किया। लखनऊ स्कूल वह साहित्यक केन्द्र था जहाँ कवि बिना किसी धर्म, राष्ट्र के केवल ज्ञान पर आधारित लाभ के लिए एकत्रित होते थे। लखनऊ स्कूल से राष्ट्रीय एकता प्रतीत होती थी।

लखनऊ स्कूल ने दूसरे स्कूलों के मुक़ाबले अधिक सामूहिक जीवन पर बल दिया! इस स्कूल में मुस्लिम कवियों के साथ–साथ हिन्दू कवियों, लेखकों की तादाद काफ़ी थी इस कारण इस स्कूल के संस्थापक मिर्ज़ा फ़ाख़िर मकीन की शगिरदी में 36 हिन्दू कवि भी थे जो धीरे–धीरे बढ़ते ही गए।

केवल लखनऊ ही नहीं पूरे भारत में उस समय साहितिक एवं नैतिक प्रगति का मार्ग केवल फ़ारसी भाषा ही थी। भारत में फ़ारसी जानने वाले पहले भी थे परन्तु फ़ारसी भाषा की व्याकरण को रिवाज देना लखनऊ में ही प्रारम्भ हुआ।

दबिस्ताने लखनऊ की सबसे प्रमुख विशेषता प्रसन्नता है! यहाँ के जो यहाँ की अमन चैन और खुशहाली ने लखनऊ के लोगों का ऐश वाले जीवन की ओर खिंचते चले गए और ऐश ओ आराम के साधनों में यहाँ की तवाईफ़े भी थी! इसी कारण लखनवी शायरी में उनके सौंदर्य और उनके कपड़ों, आभूषणों सम्पूर्ण रूप से झलकता दिखाई देता है।

लखनऊ स्कूल भाषा के लिहाज़ से अधिक आकर्षक है। अवधी इलाक़ा होने के कारण यहाँ की भाषा और लहजा काफ़ी मीठा और नरम है। भाषा के संदर्भ में लखनऊवासी दिल्लीवासियों से भिन्न रहे हैं जो चीज़ हमें लखनऊ की जीवन में बनाओ–श्रृंगार के रूप में मिलती है वह यहाँ की शायरी में भी काफ़ी हद तक प्रतीत होती है। लखनवी शाईरी के तत्व संक्षेप में इस प्रकार हैं! रूपये पैसे से सम्पन्न खुशहाली ने आशिक़ाना मसनवयों पर विशेष प्रभाव डाला!

लखनवी संस्कृति का सम्बंध ईरानी संस्कृति से था इस कारण यहाँ की शायरी और आम रहन सहन में ईरानी प्रभाव दिखते हैं। लखनऊ की शाईरी में रियाते लफ़्ज़ी और बाहरी विषयों का चलन हुआ। लखनऊ की तकल्लुफ़ से भरी संस्कृति ने तशबीहात और इशारात को बढ़ावा दिया। लखनऊ स्कूल के परमात्मा से प्रेम एवं मानवीय प्रेम दोनों एक साथ दिखाई देते हैं। लखनवी स्कूल की शाईरी से यह बात भलीभांति स्पष्ट है कि इसका सीधा सम्बंध लखनऊ प्रान्त और उसकी संस्कृति से है।

संदर्भ सूची

1. अब्दुससलाम, शाह (1997). तारीख़ें अवध, क़ासिम अली नीशापूरी, तरजुमा वा तरतीब नई दिल्ली
2. सिददीक़ी, अबुलैस (2008). लखनऊ का दबिस्ताने शाईरी जिलद अव्वल. दिल्ली
3. देहली, नईमउद्दीन, (1985). हिन्दुस्तान के फ़ारसी अदब
4. फ़ारूक़ी, जोहरा (2003). अवध के फ़ारसी गो शोरा, नई दिल्ली
5. जौहर, मोहम्मद अली (2002). लखनऊ की अदबी माहौल (बीसवीं सदी के निसफ़ अव्वल तक), अलीगढ़